B-384
L-24
General Geography

चक्रवात

उष्णकटिबंधीय चक्रवात	अतिरिक्त उष्णकटिबंधीय चक्रवात
• उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में	• मध्य अक्षांशों पर
• संघनन की गुप्त ऊष्मा से ऊर्जा प्राप्त	• तापमान में सैलिज विपरीतता से ऊर्जा प्राप्त
• केवल गहरे गर्म महासागरों में उत्पन्न	• महासागरों के साथ-साथ भूमि पर भी
• कोर गर्म	• कोर ठंडा
• संवहनीय संरचना	• वातागीय संरचना
• व्यास सामान्यतः 150-500 किमी.	• व्यास लगभग 1,000 से 4000 किमी.
• विभिन्न भागों में तापमान में कोई भिन्नता नहीं।	• विभिन्न वातागों (गर्म और ठंडे) के कारण तापमान में काफी भिन्नता।
• पूर्वानुमान कठिन	• पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

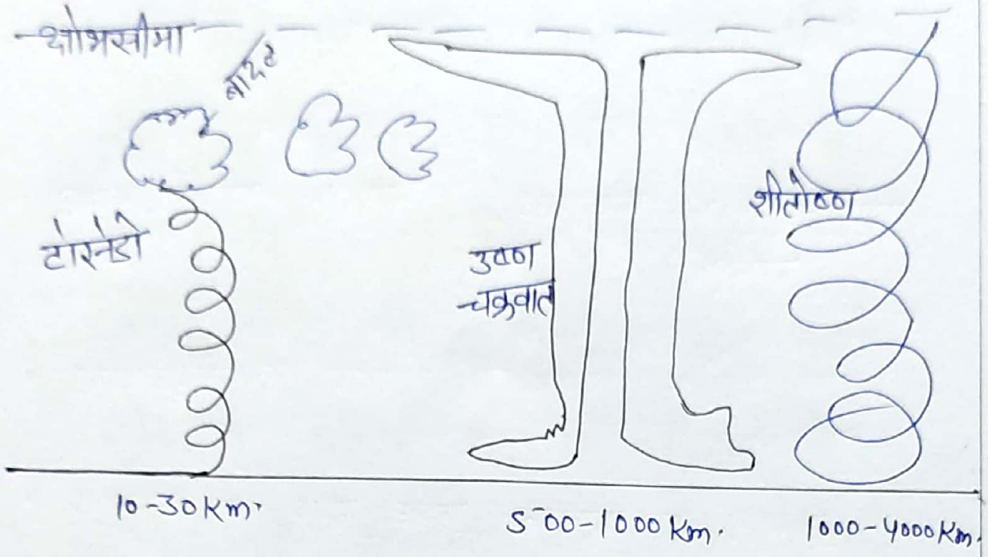

जेट धारा

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES

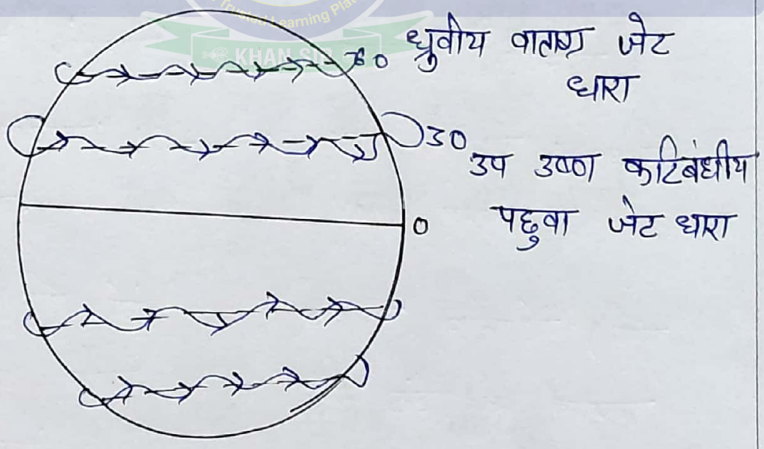

द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ाकू विमान चालकों ने ऊपरी वायुमण्डल में एक विशेष

Scanned by CamScanner

वायु परिसंचरण का अनुभव किया जिसे शोध के उपरांत जेट धारा घोषित किया गया। जेट धारा ऊपरी वायुमण्डल में क्षोभसीमा के निकट प्रवाहित होने वाली भूविक्षेपी पश्चिम से पूर्व दिशा में होने वाले संचलन का नाम है।

ये जेट धाराएँ 8-12 Km. की ऊँचाई पर पायी जाती हैं, इनकी गहराई 1-1.5 Km. और चौड़ाई 100 Km. के करीब होती है, इनकी गति 120-200 Km./घण्टा तक हो सकती है, शीत ऋतु में इनकी गति बढ़ जाती है।

बेसिक स्तर पर प्रत्येक गोलार्द्ध में 2 प्रमुख जेट धाराएँ स्थायी रूप से विकसित होती हैं-

Scanned by CamScanner

i) ध्रुवीय वाताग्र जेट धारा → ये जेट धारा 6-8 Km. की ऊँचाई पर ध्रुवीय वाताग्र के ऊपर निर्मित होती हैं। इसका मध्य अक्षांशीय जलवायु पर विशेष प्रभाव पड़ता है और शीतोष्ण चक्रवातों की दिशा का निर्धारण इस जेट धारा से होता है।

ii) उप-उष्ण कटिबंधीय पछुवा जेट → 30° अक्षांश के आस-पास निर्मित ये जेटधारा 10-12 Km. की ऊँचाई पर सर्पिलाकार रूप से प्रवाहित होती है, इसी जेट धारा के द्वारा भूमध्य सागर में बनने वाले शीतोष्ण चक्रवातों को उत्तर भारत की ओर धकेला जाता है, जिससे पश्चिमी विक्षोभ की प्रक्रिया का जन्म होता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

Scanned by CamScanner

उपरोक्त दोनों जेट धाराएँ स्थायी जेट धाराएँ कहलाती हैं, जो वर्ष भर बनी रहती हैं, इनकी स्थिति सूर्य की वार्षिक गति के प्रभाव से उत्तर व दक्षिण की तरफ खिसकती है।

अस्थायी व स्थानीय जेटधाराएँ →

जेट धाराओं पर शोध करने से यह पता चला कि कुछ स्थानिक कारणों से भी मौसमी जेट धाराओं का निर्माण होता है, इनमें से 2 जेट धारा विशेष हैं जो भारतीय मानसूनी प्रवाह को प्रभावित करती हैं, ये निम्नलिखित हैं-

i) उष्ण कटिबंधीय पूर्वी जेटधारा →

ये भारतीय ग्रीष्म ऋतु में बंगाल

Scanned by CamScanner

की खाड़ी में पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित होने वाली जेट धारा है, जिसकी ऊँचाई 3-5 km. होती है।

ii) फिण्डलेटर जेट → ये निचले वायुमण्डल में पूर्वी अफ्रीकी तट पर प्रवाहित जेट धारा है। इसका भारत के मानसून को भारतीय तट की ओर धकेलने में विशेष योगदान होता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner